शोध मंथन Vol. XII No.I Jan.-March 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

कोविद १६ काल में लोगो के जन जीवन पर क्या हुआ असर

श्रीमती सोनल उमेश पाटिल
लाइब्रेरियन, एल0 जे0 इंस्टीयूट ऑफ मेनजमेंट स्टडीज,
एल0 जे0 विश्वविद्यालय
अहमदाबाद
Email: patilsonalu@gmail.com

प्राप्तिः 22.02.2021
स्वीकृतः 20.03.2021

सारांश

दुनिया में सब कुछ सही चल रहा था तब कोरोना नाम के एक विषाणुं ने पुरी दुनिया की सोच का बदल दिया। शिक्षा का महत्व सबको पता होते हुए। दुनिया शिक्षा व्यवस्था म स्पर्धा बढ़ गयी है। कोरोना वायरस स काल में माँ बाप बच्चो का एक साल बरबाद होने से नहीं डरते थे माँ बाप ने बच्चो की सुरक्षा को ज्यादा महत्व दिया। किस प्रकार से शिक्षा निति को समय के साथ बदला गया और इसका असर बच्चो के ऊपर शारीरीक और मानसिक रूप से क्या हुआ ये देखने मिला। यूजीसी ने डिजिटल लाइब्रेरी तैयार की इसका काफी फायदा स्टूडेन्ट फैकल्टी रिसर्च कर्ता को हुआ। मध्यम वर्ग पर कोरोना का बहुत बड़ा असर दिखने को मिला मध्यम वर्ग ज्यादा तर लोग नोकरी करने वाले होते है। महीनें कि तनखा पर उनका निर्भर होता है। मध्यम वर्ग के लोगो को बेरोजगारी का डर लगने लगा था कोरोना काल में काफी कंपनी बंद हो गई लोग बेरोजगार हो गये। बेरोजगारी की समस्या बहुत ज्यादा बढ़ गई। देश की आर्थिक परिस्तिथि काफी खराब होने लगी थी तब सरकार को मदद करनें के लिए कई सारी कंपनी, संस्था, व्यक्तिगतरूप से आगे आये। लोग खुद को स्वस्थ रखने के लिए जिम, योगा जैसे जगह पर जाते थे अचानक से लॉकडाउन के वजह से घर पर बंद होने के कारण से ऑनलाइन जिम चालू कर के लोगो को स्वस्थ रहने मै मदद की इस से लोगो को घर पर रहकर कर ही ऑनलाइन जिम करने का फायदा करवाया। सब लोग की नजर लगी थी कब कोरोना की वैक्सीन आएगी तब स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने कोरोना की वैक्सीन एक से ज्यादा वैक्सीन मिलने की उम्मीद दी।

मुख्य शब्दः *शिक्षा, बेरोजगारी, ऑनलाइन, कोरोना, डिजिटल।*

प्रस्तावना

कोरोना वायरस एक जानलेवा महामारी बन चुका है। ये वायरस चीन के वुहान शहर से निकलकर पूरी दुनिया में फैल चुका हैं। कोरोना वायरस ने भारत, चीन, अमेरिका, इटली, दक्षिण कोरिया, ईरान, ब्रिटेन, जापान आदि देशों में कहर बरसा रहा है। दुनियाभर में कोरोना वायरस की वजह से अब तक हजारों की जान जा चुकी है। जबकि लाखों लोग कोरोना वायरस

से संक्रमित हैं और लगातार तेजी के साथ संख्या बढ़ती ही जा रही है। कोरोना वायरस की चपेट में आकर मरने वालों की बड़ी संख्या को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया हैं। कोरोना वायरस के खतरे से दुनिया को बचाने के लिए कई देषों के वैज्ञानिक कोरोना वायरस के वैक्सीन बनाने में जुटे हुए हैं। कोरोना वायरस का संक्रमण संक्रमित व्यक्ति के छूने, छींकने या खांसने से फैल सकता हैं। कोरोना वायरस के लक्षण हल्का बुखार, खांसी, भारीपन है। यदि इस तरह का कोई भी लक्षण आप में नजर आ रहा हो तो तुरंत डॉक्टर की सलाह लें या नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में जाएं। कोरोना वायरस जैसे किटानुं ने सबका जन जिवन खराब कर दिया कोरोना वायरस की वजह से कई देशों में शहरों को पूरी तरह बंद कर दिया गया है तो कुछ देष अभी इसकी तैयारी में हैं। नित नयी कारों हवाई यात्राओं और मॉल कल्चर की चकाचौंध में हम व्यस्त थे कि अचानक कोरोना आ गया और इसने हमारी जिंदगी की गाड़ी को जैसे पटरी से उतार दिया है। इसने जिंदगी के हर पहलू को प्रभावित किया है। यहां तक कि कोरोना ने शिक्षा के चरित्र को भी बदल दिया हैं। कोरोना वायरस को लेकर स्वास्थ्य चिंताओं की काफी चर्चा है, पर कोरोना के कारण शिक्षा के स्वरूप में भी अचानक भारी बदलाव आया है ं। घर में कब तक बंद रहना पड़े । इस डर की वजह से लोग आसपास के स्टोर से जरूरत का सामान भारी मात्रा में खरीद रहे हैं और इस वजह से अफरातफरी की स्थिति बन रही है ं। कई सारी संस्था व्यक्तिगतरूप से मदद लिए आगे आये बुजुर्गों और जरूरतमंदों को घरेलू सामान और दवाएं घर पर पहुंचाने का काम कर रहे हैं ं। आयुष मंत्रालय ने सलाह दी कि मुह को मास्क लगाना, हर एक घटे बाद २० सेंकड तक हाथ धोना है काढ़ा पीना है हल्दी वाला दुध, गरम खाना, पोष्टिक आहार,गरम पानी पिना है ं। [1][2]

इन सबके बीच कुछ सुखद अहसास कराने वाले मामले भी सामने आए हैं ं। सोशल मीडिया पर बहुत से लोगों ने अपनी नई आदतों के बारे में जैसे किताब पढ़ना, खाना पकाना और पेंटिंग करना, अपने दोस्तों के साथ बात करना हैं।[3][1]

कोरोना महामारी का रोजगार

कोरोना वायरस महामारी ने पूरी दुनिया ंको अपने घुटने में ला दिया है । लाखों नौकरीषुदा लोगों की बेरोजगारी वजह बना कोरोना वायरस ने भारत में भी बेरोजगारी की दर को कई पायदान ऊपर चढ़ गया है । यानी पहले से ही आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहे भारत में बीते मार्च 2020 में रोजगार दर अब तक सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है । बेरोजगारी का दर पहली दफा दोहरे अंक में प्रवेश कर गया है । भारत में कोरोना वायरस का पहला मामला सामने आने के बाद से भारत में बेरोजगारी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है ।

कोरोना महामारी में नौकरी ढूंढना मुश्किल हो गया और काम–धंधों का बुरा हाल हो गया बेरोजगारी लेकर हैरान कर देनेवाले आंकड़े सामने आए हैं । केंद्र सरकार की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 जुलाई को एक जॉब पोर्टल की शुरुआत की थी । इसपर 40 ही दिनों में 69 लाख लोगों ने नौकरी के लिए अप्लाइ किया लेकिन नौकरी पानेवालों की संख्या बहुत ही कम है।[4][5]

लाखों लोगों की आजिविका प्रभावित हुई है यादवजी ने षून्यकाल में यह मुद्दा उठाते हुए कहा कि लॉकडाउन के कारण करोड़ों लोगों की आजीविका प्रभावित हुयी और कई परिवार बिखर गए ऐसे में बच्चों की पढ़ाई लिखाई तो दूर रही वे भूखे सोने के लिए विवश हो गए । उन्होंने कहा कि इस महामारी के कारण लोगों में मानसिक तनाव और हताषा बढ़ती ही जा रही है। ऐसे में लोग आत्महत्या की ओर बढ़ रहे हैं।[1][6]

ऑनलइन शिक्षा और कठिनाया

मौजूदा दौर में बच्चों को पढ़ाना आसान नहीं है । कुछ समय पहले तक माना जाता था कि बच्चे, शिक्षक और अभिभावक, ये शिक्षा की तीन महत्वपूण कड़ी हैं । हमारी शिक्षा व्यवस्था इन तीनों कड़ियों को जोड़ने में ही लगी थी कि इसमें डिजिटल की एक और कड़ी जुड़ गयी है । शिक्षा व्यवस्था की सर्वाधिक महत्वपूण कड़ी शिक्षक हैं । लेकिन वर्चुअल कक्षाओं ने इंटरनेट को भी शिक्षा की एक अहम कड़ी बना दि है ।[6][7]

लॉकडाउन में डिजिटल पढ़ाई एक महत्वपूण माध्यम उभर आए हैं । वर्चुअल क्लास रूम को लेकर खासी चर्चा हो रही है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में गरीब तबका के पास न तो स्मार्ट फोन है, न ही कंप्यूटर और न ही इंटरनेट की सुविधा जाहिर है । अब ऐसे अभिभावकों पर बच्चों को ये सुविधाएं उपलब्ध कराने का दबाव रहेगा । गरीब तबका इस मामले में पहले से पिछड़ा हुआ था । कोरोना ने इस खाई को और चौड़ा कर दिया है । कोरोना के फैलाव के साथ ही मार्च 2020 में स्कूलों को बंद कर दिया गया था । अधिकांश स्कूलों में सत्र पूरा नहीं हो पाया । अनेक स्कूलों, इंजीनियरिंग कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में फाइनल परीक्षाएं नहीं हो पायी हैं । यहां तक कि सीबीएसइ जैसा बोर्ड भी अपनी परीक्षाएं पूरी नहीं कर पाया है । लॉकडाउन को लेकर हुई घोषणा के अनुसार, यदि सब कुछ ठीक रहा, तो स्कूल खोलने पर विचार किया जा सकता है ।[2][6]

लॉकडाउन के कारण कक्षाएं ठप हैं। देश के सभी बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा फिलहाल संभव नहीं है । नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस के आंकड़ों के मुताबिक केवल 23 फीसदी भारतीय घरों में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। इसमें ग्रामीण इलाके भारी पीछे हैं । शहरी घरों में यह उपलब्धता 42 फीसदी है, जबकि ग्रामीण घरों में यह 149 फीसदी ही है ।[6][7]

केवल आठ फीसदी घर ऐसे हैं, जहां कंप्यूटर और इंटरनेट दोनों की सुविधा उपलब्ध है । देश में मोबाइल की उपलब्धता 78 फीसदी आंकी हो गयी है पर इसमें भी शहरी और ग्रामीण इलाकों में भारी अंतर है ।[1][7]

देश में प्राइवेट और सरकारी स्कूलों की सुविधाओं में भारी अंतर है । प्राइवेट स्कूल में मोटी फीस वसूलते हैं और उनके पास संसाधनों की कमी नहीं है ।[3][8]

जिनके परिवार में केवल एक स्मार्टफोन है। लॉकडाउन के दौरान पढ़ाई की सामग्री व्हाट्सएप अथवा अन्य डिजिटल तरीके से दी जा रही थी सभी भाई–बहन बारी–बारी से उस एक मोबाइल से षिक्षा सामग्री ग्रहण कर रहे थे इन कठिन परिस्थितियों में भी इन बच्चो ने कमाल कर दिखाया।[4][9]

हाल में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जब आर्थिक पैकेज की घोषणा की थी, तो उसमें डिजिटल पढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए पीएम ई–विद्या कार्यक्रम का भी एलान किया गया था। इसके तहत ई–पाठ्यक्रम, शैक्षणिक चौनल और सामुदायिक रेडियो का इस्तेमाल करके बच्चों तक पाठ्य सामग्री पहुंचाने की बात कही गयी थी यह भी घोषणा की गयी है कि पहली से लेकर 12वीं तक की कक्षाओं के लिए एक–एक डीटीएच चौनल शुरू किया जायेगा। [9][10]

हर कक्षा के लिए छह घंटे का ई–कंटेंट तैयार किया जा रहा है और इसे छात्रों तक पहुंचाने के लिए रेडियो, सामुदायिक रेडियो और पॉडकास्ट सेवाओं का भी इस्तेमाल किया जायेगा । साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय ने देश के 100 शीर्ष विश्वविद्यालयों को ऑनलाइन कोर्स शुरू करने की मंजूरी भी दी है। दूरदर्शन पर पहले भी ज्ञान–दर्शन जैसे कार्यक्रम आया करते थे, लेकिन वे बहुत सफल नहीं रहा ।[8][10]

सरकार की घोषणाओं में विभिन्न माध्यमों से ऑनलाइन पढ़ाई पर जोर दिया गया है, मगर यक्ष प्रश्न यह है कि जहां इंटरनेट, टीवी और निरंतर बिजली उपलब्ध न हो, वहां बच्चे इन सुविधाओं का कैसे लाभ उठा पायेंगे। डिजिटल शिक्षा को बढ़ाना सराहनीय कदम हैं, लेकिन इसके समक्ष चुनौतियां बहुत हैं।[10]

शिक्षा और रोजगार का चोली–दामन का साथ है। यही वजह है कि हर माता–पिता बच्चों की शिक्षा को लेकर बेहद जागरूक है। उनकी आकांक्षा रहती है कि उनका बच्चा अच्छी शिक्षा पाए, ताकि उसे अच्छा रोजगार मिल सके । बच्चों की शिक्षा के लिए पूरी जमा पूंजी दांव पर लगा देने को तैयार रहते हैं । साथ ही किसी भी देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति भी उस देश की शिक्षा पर निर्भर करती है।[1]

कोरोना वायरस महामारी ने शिक्षा के क्षेत्र को क्षति पहुंचाई है । कोविड–19 के कारण सभी छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, कई बोर्ड बिना परीक्षा के ही बच्चों को अगली कक्षा के लिए प्रोमोट कर रहे हैं। ऐसे में को माता–पिता बच्चों के भविष्य को लेकर काफी चिंतीत हो गए है। एक रिपोर्ट के अनुसार महामारी के कारण कई माता–पिता ऐसे हैं, जो एक साल तक बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते, वह बच्चों को घर पर ही सुरक्षति रखना चाहते हैं।[2]

कई माता–पिता अपने बच्चों को इस साल स्कूल भेजने की तुलना में घर पर रखना बेहतर समझते हैं। षहरों में माता–पिता की राय है कि वह अपने बच्चों को कोविड–19 के समय में स्कूल जाने की तुलना में एक साल बर्बाद होने को बुरा नहीं मानते । इसका मतलब है कि बच्चों का एक साल बर्बाद हो जाए तो इससे कोई समस्या नहीं है, क्योंकि अधिकांश माता–पिता बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता देना पसंद करते हैं। बच्चों को स्कूल न भेजने का कारण है कोविड–19 और इसका प्रसार। अधिकांष माता–पिता यह सुनिश्चित नहीं करते हैं कि स्कूलों में उनके बच्चे सुरक्षित होंगे। यह सिर्फ स्कूल नहीं है, घर से स्कूल तक की पूरी यात्रा और वापसी यात्रा, आदि माता–पिता को चिंतित करती है । ऑनलाइन स्कूल की प्राथमिकता वह कहती हैं कि मैं व्यक्तिगत रूप से अपने बच्चे को स्कूल नहीं भेजूंगी, क्योंकि वह छोटा है और मास्क के महत्व या उपयोग को नहीं समझता है। उनका ऑनलाइन स्कूल पहले ही शुरू हो चुका है, जो

अब तक ठीक चल रहा है । माता–पिता के व्यस्त होने के बावजूद हमें काम, गृहकार्य, और स्कूल के काम के बीच संघर्ष करना पड़ता है। दिवाली तक स्थिति में व्यापक सुधार नहीं हुआ तो उसे दिवाली तक भी स्कूल नहीं भेज सकती । कई माता–पिता कहते हैं बच्चों की सुरक्षा महत्वपूर्ण हैं वे अपने बच्चों को उस समय तक नहीं भेजेंगे जब तक कि कोरोना वायरस महामारी का टीका नहीं लग जाता।[9][10]

स्कूली छात्रों को यहां थोड़ा संभलना होगा

सुरक्षा पर संकट– ऑनलाइन वर्क में सुरक्षा को खतरा हमेशा बना रहता है, क्योंकि कई ऑनलाइन अपराधियों को पता है कि कोरोना के इस वक्त में छात्र और शिक्षक ऑनलाइन हैं । यह खतरा स्कूली बच्चों पर ज्यादा होता है। स्कूलों की ज्यादातर वेबसाइटों में ऑनलाइन सुरक्षा का स्तर मजबूत नहीं होता है।[1][8]

प्राइवेसी– ऑनलाइन एजुकेषन से छात्रों के काफी डेटा ऑनलाइन हो जाते हैं, जैसे, नाम, ईमेल, ग्रेड और टेस्ट स्कोर। ऑनलाइन एजुकेशन मुश्किल की इस घड़ी में ठीक है, लेकिन इससे आइसोलेशन का भी खतरा होता है । ऐसे में अच्छे कोर्स और खराब कोर्स की पहचान होती है।जानते नहीं कौन सा कोर्स कैसा है अभी ऑनलाइन कोर्स और एजुकेषन को लेकर लोगों की समझ कम है । [3][8]

बच्चों को शारीरिक तकलीफ का भी **खतरा** है। बच्चों को लैपटॉप टैब या इस्तेमाल से पढ़ने की आदत कम होती है । इसलिए उन्हें पीठ दर्द जैसी तकलीफ भी हो सकती है। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के एक शोध के मुताबिक नियमित कंप्यूटर सेटअप के डिजिटल एजुकेशन से बच्चों पर कई तरह की चोट का खतरा भी होता है।[7][9]

डिजिटल लाइब्रेरी

यूजीसी ने डिजिटल लाइब्रेरी तैयार की है। इससे छात्रों को कोरोना पर रिसर्च करने में सुविधा होगी। "जागरण संवाददात" यूजीसी ने रिसर्चर व फैकल्टी से कहा, लाइब्रेरी में रिसर्च व आइडियाज डालें लॉकडाउन के बीच यूनिवर्सिटी ग्राट कमीशन ने कोरोना पर डिजिटल लाइब्रेरी तैयार कि है। इस लाइब्रेरी में कोरोना से संबंधित देश व विश्व स्तरीय सभी अपडेट पब्लिकेशन, डाटा, डाक्यूमेंट्स, वीडियो, जर्नल, कांफ्रेंस, आइडियाज उपलब्ध है। यदि कोई कोरोना पर किए गए वर्क रिसर्च वर्क को इस लाइब्रेरी में रखना चाहता है या लाइब्रेरी से अपडेट जानकारी लेना चाहता है तो ले सकता है। यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालय के कुलपति को पत्र लिखकर कहा है कि वे अपने रिसर्चर, फैकल्टी, छात्रों को जानकारी देते हुए **डिजिटल लाइब्रेरी** के लिए प्रोत्साहित करें। यूजीसी ने आइआइटी खड़गपुर के सहयोग से कोरोना से लड़ाई की दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया एनडीएलआइ प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया है। कोई भी विद्यार्थी या फैकल्टी वेबसाइट– डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एनडीएल. जीओभी. इन पर कोरोना आउटब्रेक स्टडी फ्रॉम होम पर क्लिक करेंगे तो कोरोना से संबंधित अपडेट मैटेरियल्स मिलेगा। यूजीसी ने रिसर्चर व फैकल्टी से कहा है कि वे अपने नए–नए आइडिया के साथ सामने आएं। आप अपने रिसर्च को इस प्लेटफार्म पर डिजिटली संग्रह करें

ताकि इसका फायदा कोई भी उठा सकें। लॉकडाउन के दौरान यूजीसी ऑनलाइन इंटर्नशिप में वैसे एक्टिविटी को बढ़ावा देने की बात कही है जो घर से ही डिजिटली किया जा सके। नई बातें लाने से विद्यार्थी परेशान होंगे। इतना ही नहीं इंटर्नशिप का डेट बढ़ा दें। इंटर्नशिप की समय अवधि कम कर उसके साथ असाइनमेंट को शामिल कर दें। कोरोना न कल में कई सारे वेबनीनार लिए गये इसे काफी लोगो फायदा हुआ। लोगो को कई बार सेमिनार अेटेंड कर ने की इच्छा होते हुए भी अेटेंड कर नहीं पाते थे इसका फायदा काफी हद तक लाइब्रेरियन को हुआ नई जानकारी मिली लाइब्रेरी डिजिटल करते टाइम आने वाली कोन से परेशानी आती हैं उनका हल भी मिला।[5][7]

कोरोना महामारी और मध्यम वर्ग

कोरोना महामारी से हर वर्ग के साथ मध्यम वर्ग के लोग इस महामारी से बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं । क्योंकि मध्यम वर्ग के लोगों के पास न तो काफी दिनों तक खाने के लिए राशन है और न ही धन राशि। समस्याओं को झेलते हुए भी वह किसी को भी आ रही समस्याओं से अवगत नहीं करवा रहे। प्रभाकर ने कहा कि मध्यम वर्ग के लोगों के पास अधिक पैसे नहीं होते, क्योंकि वह लोग महीने की तनख्वाह पर ही निर्भर होते हैं । कोरोना कल में मध्यम वर्ग के लोगो अपने परिवार को साथ रहे ने का मौका मिला क्योकि मध्यम वर्ग के लोग खुद परिवार को टाइम नहीं दे पाते थे यह बहुत ही अच्छा मौका मिला । सरकारों व प्रशासनों द्वारा मध्यम वर्ग की भी मदद की जाए कहा करोना महामारी मे जरूरतमंद व गरीबी स्तर में आने वाले लोगों को सुविधाएं दी जा रही हैं। लेकिन बड़ी संख्या में हमारे देष व राज्य में मध्यम वर्ग के लोग रहते हैं । कोरोना महामारी से मध्यम वर्ग के लोगों का जीना मुश्किल हो गया हैं । क्योंकि कोरोना के चलते कोई कारोबार न चलने से उनके पास राशन व जरूरी वस्तुओं की खरीदारी के लिए कोई साधन नहीं है। गुजरात के अहमदाबाद के लोक जागृति केंद्र जैसे बड़ी सांस्थ आगे आयी और सरकार ५० लाख की मदद दी । गरीब लोगों को खाना देना का काम किया। अपने कर्मचारी को भी पुरी तरहा से सहायता की। इस तरहा से अनके राज्य मे मदद करेनेवाली अनके संस्था आगे आयी ।[9][10]

मजदुर लोग बहुत डर गये थे डर के मारे पैदल ही अपने गाँव तरफ निकल पड़े १००० मील का फासला नाप लिया पेट में खाना नहीं और कुछ लोगों ने चलते चलते ही दम तोड़ दिया फिर सरकार ने मजदुर लोगो से विनती की आप लोग घबराए नहीं पर लोग मनाने को तैयार नहीं आखिर मे मजदूर के लिए ट्रेन चालू की कुछ नियम के साथ ।[6][9]

फिटनेस उद्योग पर कोविद –19 का प्रभाव

फिटनेस उद्योग विषेश रूप से ईंट और मोर्टार जिम कोविद–19 की शुरुआत में सबसे कठिन थे। जिम और फिटनेस स्टूडियो में कोरोनोवायरस के खतरे से मजबूरन शटडाउन से गुजरने वाले पहले व्यवसाय थे क्योंकि ये उच्च–स्पर्श व्यवसाय हैं। हालांकि दीर्घकालिक प्रभाव ज्ञात नहीं हैं, अल्पावधि प्रभाव निष्चित रूप से कई लोगों के लिए विनाशकारी रहे हैं। जिम और स्टूडियो मालिकों, पेषेवर प्रशिक्षकों और सहायक कर्मचारियों की बेरोजगारी का एक बड़ा संकट

आया है। मालिकों को बैंक ऋण, किराए, बिजली के बिल और कर्मचारियों के वेतन का भुगतान करना मुश्किल हो गया। कई बुटीक जिम वास्तव में छोटे मार्जिन पर चलते हैं और इसलिए महामारी ने अपने अस्तित्व पर बहुत बड़ी चुनौती पेश की ईंट और मोर्टार जिम जो यूएस फिटनेस उद्योग में सबसे अधिक हिस्सेदारी का योगदान करते हैं। लोग फिटनेस को लेकर काफी जागृत थे । लोग जिम जाते थे योग करते थे । जो लोग हरदिन जिम जाते थे वह लोग जिम जाने से डर ने लगे। कोरोना कल में लोगो को फिटनेस की जरुरत थी तब SFW जिम की १५ ब्रान्च वाले के फाउंडर मनोज राजपूत इन्होंने लॉकडाउन में अपने स्टाफ को पूरी तरिके से साहयता की और ट्रेनरस को ऑनलाइन जिम के क्लास चालू कर ने का सुझाव किया। नील जेठवा, राधेश्याम पटेल, माधावी, की टीम ट्रेनरस ने फ्री ऑनलाइन जिम के क्लास चालू कर के फिटनेस को लेकर काफी जागृत किया जिस कारन लोग बहुत खुश हो गये लॉकडाउन के बाद जब जिम खुली जिम में आने वाले लोगो की सांख्य १०० से २०० थी अब लोग कोरोना के डर से 5० से 6० लोग आते।[5][6]

नए साल में एक ज्यादा वैक्सीन मिलने की उम्मीद

डॉ. हर्षवर्धन देश के लिए अच्छी खबर है। कोरोना वैक्सीन पर तेजी से काम हो रहा है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि उम्मीद है कि जैसे ही नया साल शुरू होगा, देश में कोरोना की वैक्सीन उपलब्ध हो जाएगी, वह भी एक से ज्यादा सोर्स के जरिए। देशभर में इसके डिस्ट्रीब्यूशन की प्लानिंग पर काम शुरू हो गया है। उम्मीद है कि जुलाई 2021 तक हम देश में वैक्सीन के 40–50 करोड़ डोज मुहैया कराकर देष के 20–25 करोड़ लोगों को वैक्सीन दे सकेंगे।[9][10]

निष्कर्ष

कोरोना काल मे लोग की जीवनशैली पर किस तरह से बदल गई ये देखने मिला। हर कोई अपने परिवार को सुरक्षित रखना चाहता था। ऑनलाइन की वजह से कई सारी नई सोच और नई कला को गति भी मिली। देश की आर्थिक परिस्तिथि कमजोर होने से लोग के मन मे बेरोजगारी का डर लगने लगा था। ऑनलाइन एजुकेषन से कई बच्चों को कई सारी बीमारी से गुजरना पड़ा है। ऑनलाइन एजुकेषन P.G. लेवल के स्टूडेंट के लिए ठीक है पर अब K.G के बच्चे भी ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे है जब की छोटे बच्चो की ऑनलाइन पढ़ाई कर पाये इतने सक्षम नहीं होते है । गरीब लोगो के डर के मारे गांव जाने के लिए निकल परिवार पास रहकर समय गुजरना पसंद किया। उच्च स्तर के लोग अपनी सहेद का ध्यान जिम जा कर रख रहे थे । जिम, योगा को लॉकडाउन के वजह से बंद होन से काफी लोगों तकलीफ से गुजरना पड़ा। काफी सारे जिम और योगा के ऑनलाइन क्लास षुरू किये इस से लोगो बहुत फयदा हुआ।

संदर्भ ग्रंथ

[1] Kumar (2021), retrieved from https://www.jagran.com/news/national, as on 23rd January 2021

[2] C.K. OZA (2020), Covid19: retirieved from https://www.dw.com/hi, as on 27th August 2020
[3] Jagran (2020),retrieved from https://www.jagran.com/jharkhand/, as on 4th May 2020
[4] K.Verma (2020), retrieved from https://www.jagran.com/news / as on 6th June 2020
[5] K.Verma (2020), retrieved from https://www.aajtak.in/india/, as on 10th June 2020
[6] Navodaya times (2020), retirieved from https://www.navodayatimes.in/, as on 15th September 2020
[7] S.Gupta (2020), retrieved from https://hindi.oneindia.com/news/india/, as on 15th April 2020
[8] S.Mishra (2020), Covid19: retrieved from https://www.dw.com/hi/a-54569367, as on 14th August 2020
[9] TV 9 (2020), retrieved from https://www.tv9hindi.com/india/, as on 24th August 2020
[10] Zee News (2020), Covid19: retirieved from https://zeenews.india.com/hindi, as on 13th OCT.2020